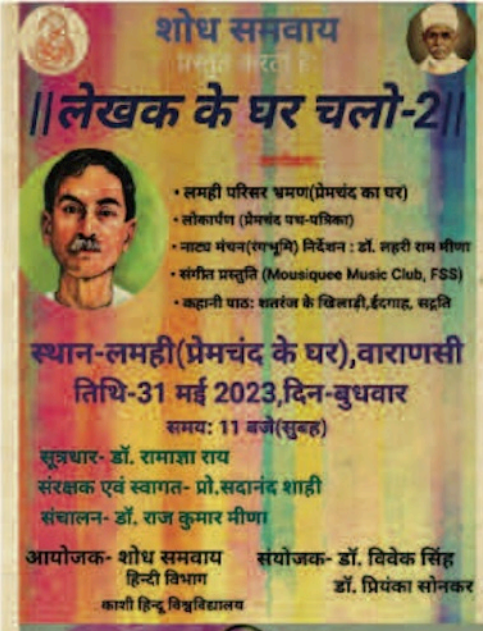

शोध समवाय
||लेखक के घर चलो-2||
• लमही परिसर भ्रमण(प्रेमचंद का घर)
• लोकार्पण (प्रेमचंद पथ-पत्रिका)
• नाट्य मंचन(रंगभूमि) निर्देशन : डॉ. लहरी राम मीणा
• संगीत प्रस्तुति (Mousiquee Music Club, FSS)
• कहानी पाठ: शतरंज के खिलाड़ी,ईदगाह, सद्गति
स्थान-लमही(प्रेमचंद के घर),वाराणसी
तिथि-31 मई 2023,दिन-बुधवार
समय: 11 बजे(सुबह)
सूत्रधार- डॉ. रामाज्ञा राय
संरक्षक एवं स्वागत- प्रो.सदानंद शाही
संचालन- डॉ. राज कुमार मीणा
आयोजक- शोध समवाय
हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
संयोजक- डॉ. विवेक सिंह
डॉ. प्रियंका सोनकर

हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का आयोजन
लेखक के घर चलो-2
रंगभूमि उपन्यास का नाट्य मंचन
निर्देशन: लहरी राम मीणा
स्थान: प्रेमचंद के घर लमही, वाराणसी
समय: 2 बजे 31 मई, 2023

कर्म
भूमि
14
प्रेमचन्द के साहित्य पर केन्द्रित अर्द्ध वार्षिक पत्रिका

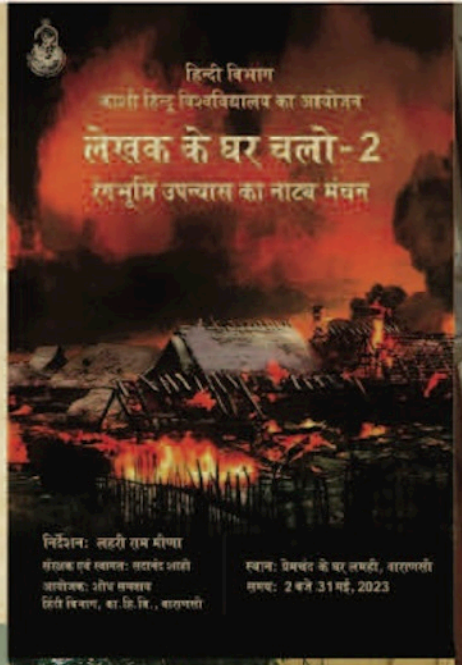

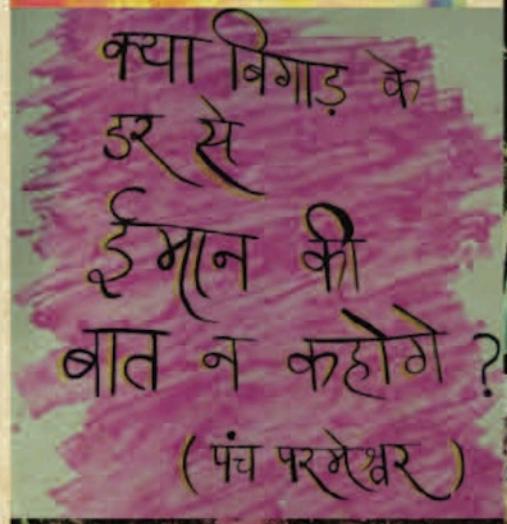

क्या बिगाड़ के
डर से
ईमान की
बात न कहोगे?
(पंच परमेश्वर)

TOURIST
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
31 मई 2023, दिन 11 बजे से

TOURIST

हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का आयोजन
लेखक के घर चलो-2
(क्योंकि) साहित्य राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है-प्रेमचन्द

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान
PREMCHAND SAHITYA SANSTHAN
सम्पादक
सदानन्द शाही

लेखक के घर चलो - 2
प्रेमचंद के घर में
नाटक, कहानी पाठ, परिचर्चा
31 मई 2023, दिन 11 बजे से
आयोजक- शोध समवाय
हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

कर्मभूमि

प्रेमचन्द के साहित्य पर केन्द्रित अर्द्धवार्षिक पत्रिका

अंक-14

जून 2023

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान
PREMCHAND SAHITYA SANSTHAN

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान
प्रेमचन्द पार्क, बेतियाहाता–गोरखपुर द्वारा प्रकाशित

सम्पादक मण्डल
रामदेव शुक्ल
मदन मोहन
अनिल राय
राजेश कुमार मल्ल
मनोज कुमार सिंह
कपिलदेव

सम्पादक
सदानन्द शाही

सह-सम्पादक
सुजीत कुमार सिंह
शैलेन्द्र कुमार सिंह

सम्पादन सहयोग
हिमांशी गंगवार
सोनू शर्मा

पोस्टर
पंकज दीक्षित
अनुरति

आवरण सज्जा
राहुल कुमार शॉ

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान
PREMCHAND SAHITYA SANSTHAN

सहयोग राशि
₹ 100/- मात्र
(संस्थान के सदस्यों के लिए निःशुल्क)

संस्थान की वार्षिक सदस्यता
₹ 500/- मात्र

सहयोग, सदस्यता एवं पत्रिका प्राप्ति हेतु दिये गये खाते में धनराशि जमा कर मो. 7275466771 पर सूचित करें :
A/c No : **20189318519**
Bank : **Indian Bank**
Branch : **Gorakhpur University, Gorakhpur**
IFSC Code : **IDIB000G616**
MICR Code : **226019050**

अनुक्रम

अध्यक्ष की कलम से
रामदेव शुक्ल 04

सम्पादकीय
लेखक के घर चलो / सदानन्द शाही 05

कहानी
- ईदगाह / प्रेमचन्द 07
- प्रतिरोध का उज्ज्वल दृष्टांत : ईदगाह का पुनःपाठ / गौतम सान्याल 14

साक्षात्कार (दस्तावेज)
- प्रेमचन्द की पुत्री श्रीमती कमलादेवी श्रीवास्तव से प्रो. लक्ष्मीनारायण दुबे की बातचीत 32

हिन्दी विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का विशेष आयोजन **लेखक के घर चलो : प्रेमचन्द के घर चलो**
- प्रो. कमलेश वर्मा, डॉ. प्रियंका सोनकर, हिमांशी गंगवार, सीमांकन यादव, खुशबू कुमारी, गोलेन्द्र पटेल, अनुरति, नम्रता वर्मा, शुभम कुमारी मिश्रा, रिंकी कुशवाहा, अंकित कुमार मौर्य, रोशनी धीरा 36

रिपोर्ट : हिन्दी विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का विशेष आयोजन
- प्रेमचन्द के घर चलो : 31 मई 2023 / रोशनी धीरा 51

- नमक का नया दारोगा (कविता) / सदानन्द शाही 56

●

अध्यक्ष की कलम से

■ रामदेव शुक्ल

प्रेमचन्द हिन्दी के सर्वप्रिय लेखक हैं क्योंकि वे अपने समय-समाज को न केवल ठीक से समझते हैं बल्कि समय-समाज को ठीक-ठीक समझ में भी आते हैं। इसलिए साहित्य में सक्रिय सभी धाराएँ प्रेमचन्द की सर्वप्रियता से जुड़ कर खुद को प्रासंगिक बनाये रखने की कोशिश करती रहती हैं। इस कोशिश में प्रेमचन्द साहित्य की दुर्व्याख्या भी होती रही है। मल्लिनाथ ने कहा था—'कालिदास की कविता दुर्व्याख्या के विष से मूर्छित हो गयी है'। प्रेमचन्द का साहित्य भी ऐसी दुर्व्याख्या का शिकार होता रहा है। कर्मभूमि दुर्व्याख्या के गर्द-गुबार को झाड़कर मूल प्रेमचन्द तक पहुँचने का रास्ता बनाने की विनम्र कोशिश है।

कहने की ज़रूरत नहीं कि प्रेमचन्द का साहित्य हमें हमारी वास्तविक कर्मभूमि की ओर प्रवृत्त करता है और हमारी स्वाधीन चेतना को उद्‌बुद्ध करता है। हमारी स्वाधीनता तभी सुदृढ़ और स्थायी हो सकती जब हमारी स्वाधीन चेतना उद्‌बुद्ध और क्रियाशील रहे। हमारी कोशिश है कि कर्मभूमि प्रेमचन्द के साहित्य की इस उद्‌बोधनकारी भूमिका को प्रकाशित करने का माध्यम बनें। इस कोशिश में आपका सहयोग अपेक्षित है।

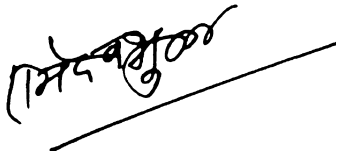

सम्पादकीय

लेखक के घर चलो

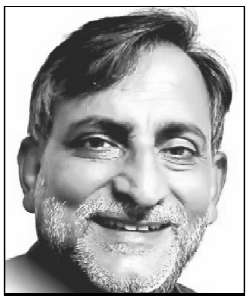

■ सदानन्द शाही

वैसे तो लेखक का कोई घर नहीं होता। होता भी है तो वह उसे बार-बार जला देता है और बेहद्दी मैदान में जा खड़ा होता है। ऐसा कबीर हमें बताते हैं। कबीर संकीर्णता के ईंट-गारे से बने घर को जला देने की बात करते हैं पर साथ ही वे गगन मंडल में एक घर बनाने की बात भी करते हैं। कबीर के मीत और हम शहरी रैदास भी बेगमपुरा के रूप में ऐसे ही घरों का समूह बनाते हैं। गालिब बे दरो दीवार का घर बनाने का प्रस्ताव करते हैं। जाहिर है यहाँ उस सूक्ष्म घर की बात हो रही है, जिसमें हमारा मनोलोक निवास करता है। हमारा लोभ, हमारा भय, हमारा अहंकार, हमारा स्वार्थ बार-बार हमें संकीर्णता के घेरे में समेटता है। हमारा प्रेम, हमारी करुणा और ममत्व हमें विराट भव्य और उदात्त की ओर ले जाता है। यह दोनों विरोधी प्रवृत्तियाँ टकराती रहती हैं। लेखक के मनोलोक में यह टकराहट सबसे तेज गति से घटित होती है। इसीलिए वह बार-बार अपने को तोड़ता, बदलता और विस्तारित करता रहता है। इस प्रक्रिया से गुजरते हुए लेखक उदात्त भाव का सृजन करता है। मनुष्य के पास शब्दों का एक प्रति संसार होता है। शब्दों के सहारे ही वह जड़ और संकुचित यथार्थ के बरक्स एक खुला हुआ मुक्त और न्यायपूर्ण विकल्प प्रस्तावित करता है। वसुधैव कुटुम्बकम जैसे उदात्त भाव पहले शब्दों में व्यक्त होते हैं फिर मानवता इन्हें हकीकत में बदलने की कोशिश करती रहती है। साहित्य राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है, प्रेमचन्द का यह मशहूर वाक्य पढ़ते हुए अनायास ही अंग्रेजी के रोमांटिक कवि शेली का कथन कि कवि समाज के अप्रत्यक्ष विधि निर्माता होते हैं, की याद आ जाती है। इन लेखकों के सामने यह बात स्पष्ट रही होगी कि अनेक वजहों से राजनीति रास्ता भटक सकती है, कूटनीति से होते हुए खलनीति तक पहुँच सकती है और हितभाव के विरूद्ध जा सकती है। ऐसे में साहित्य उसका मार्ग प्रशस्त करता है। साहित्य का स्वधर्म है हितभाव इसलिए साहित्य राजनीति को हितभाव की सीख देता है। साहित्य अपने स्वधर्म से विमुख होगा तो साहित्य नहीं रह जायेगा जबकि राजनीति बार-बार अपने स्वधर्म से विचलित होती रही है। ऐसे में साहित्य उसका मार्ग प्रशस्त करता रहा है। स्वाधीनता संघर्ष के इतिहास को देखें तो स्वदेशी, स्वत्व निज भारत गहै या एकला चलो जैसे विचार पहले साहित्य में आये फिर राजनीति में इनका व्यावहारिक विनियोग हुआ और भारत को आजादी मिली। दुनिया के स्तर पर भी ऐसे उदाहरण देखे जा सकते हैं, इसीलिए हर जाग्रत समाज अपने लेखकों के जीवंत सम्पर्क में रहता है और वहाँ से अपने लिए जीवद्रव्य जुटाता रहता है। दुर्भाग्यवश पिछले तीन दशकों से हम तेजी से साहित्य विमुख हुए हैं। साहित्य ने कुछ और दिशा पकड़ रखी है और समाज कुछ अलग दिशा में बढ़ रहा है। हम ऐसा समाज बना रहे हैं जिसे 'दिल माँगे मोर' जैसे